Deg-II
HIS (H) P-III

अलाउद्दीन के भूमि सुधार नीति

अलाउद्दीन खिलजी के भूमि सुधारों का उद्देश्य दीपालपुर एवं लाहौर से कड़ा (इलाहाबाद) तक के क्षेत्र के गांवों को सरकार के निकट संपर्क में लाना था जिसके लिए इस क्षेत्र के गांवों को खालिसा के तहद लाया गया, यानि उन्हें किसी भी अमीर को इक्ता के रूप में नहीं दिया गया। धर्मार्थ अनुदानों के रूप में दी गई जमीनें भी जब्त कर ली गई एवं खालिसा के तहद लाई गई। साथ ही यह तय किया गया कि इस क्षेत्र में भू-राजस्व (खराज) उपज का आधा भाग होगा और उसका आकलन पैमाईश के आधार पर किया जायेगा। भू-राजस्व का निरूपण उपज के रूप में किया जाता था और उसकी अदायगी नकद होती थी जिसके लिये काश्तकारों को अपनी फसल बाजारों को बेचनी पड़ती थी अथवा उसे स्थानीय बाजार (मंडी) में बेचने के लिए ले जाना पड़ता था।

कुलीनों को भूमि दी जाने के लिए कई प्रकार के करों का विधान था जैसे 'भाग', भोग, कर यानी भू-राजस्व, शुल्क और अन्य उपकर, आदि। खालिसा के तहद लाए गए क्षेत्र में अलाउद्दीन ने खत, मुकद्दमों और चौधरियों के विशेषाधिकारों पर अंकुश लगाने का प्रयत्न किया।

ग्रामीण समाज के विभिन्न वर्गों पर अलाउद्दीन के भूमि सुधारों का वास्तविक प्रभाव क्या पड़ा। अलाउद्दीन ने न केवल खतों, मुकद्दमों और चौधरियों को अन्य

P.T.O

लोगों की तरह ही चराई कर और घर कर देने के लिए बाध्य किया एवं मापन पद्धति के जरिए सुनिश्चित किया कि वे भू राजस्व के अपने बोझ को दूसरों के कंधों पर न डाल पाएं, अपितु उन्हें भूराजस्व वसूल करने के एवज में मिलनेवाले खुती मुकद्दमों से भी वंचित कर दिया।

भूमि पद्धति में सुधार करते समय अलाउद्दीन ने यह प्रयास किया कि राजस्व प्रणाली का संचालन कुशलता और ईमानदारी से किया जाए। यह कार्य अपेक्षाकृत काफी समय में पूरा कर लिया गया जो इस तथ्य का परिचायक है कि किस प्रकार यह शासक छोटे-छोटे शहरों तक पहुँच पाने में सफल हो गए।

जमीन को मापने, स्थानीय विशेषाधिकारयुक्त वर्गों के उत्पीड़न को कम करने एवं गाँव के पटवारियों की बहियों की सहायता से स्थानीय राजस्व कर्मचारियों के खाते और हिसाब किताब की जांच-पड़ताल कराने की अलाउद्दीन की नीति ने एक ऐसा मानक और आदर्श कायम किया जिसे शेरशाह और अकबर जैसे शासकों ने भी अपनाने का प्रयत्न किया | ~~किन्तु~~

सम्भवतः अलाउद्दीन के भूमि सुधारों का एक महत्वपूर्ण और चिरस्थायी प्रभाव गांवों में बाजारी अर्थव्यवस्था की वृद्धि में तथा गाँव एवं शहर के बीच घनिष्ठ एवं पूरक संबन्धों की स्थापना के रूप में प्रकट हुआ। जिसके फलस्वरूप सल्तनत के आंतरिक पुनर्गठन की प्रक्रिया तीव्र हुई |